Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 21, Issue No. 2, March-2024,(Special Issue), ISSN 2230-7540

ममता कालिया के उपन्यासों में स्त्री जीवन का चित्रण

भावना चितलांगिया[1]* डॉ. निरुपमा हर्षवर्धन[2]

[1] शोधार्थी, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान

Email: shalusoni201291@gmail.com

[2] शोध निर्देषक, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान

सार – *ममता कालिया के उपन्यासों में स्त्री जीवन का चित्रण नारी को शक्ति का प्रतीक मानते हुए भी किया है जहाँ वह समस्त दुःखों का शरण करते हुए भी सदैव कर्तव्य निष्ठ तथा कर्म प्रधान रहती है। नारी अपनी मेहनत और मेधा शक्ति के बल पर उन्होंने हर क्षेत्र में अपना नाम रोषन किया है। षिक्षा के कारण आज उनके लिए अर्थोपार्जन के नये–नये द्वार खुले है। हिन्दी साहित्य में ममता कालिया का नाम महिला लेखन के क्षेत्र में प्रमुखता से लिया जाता है। महिला की जीवनगत परिस्थितियों को अत्यन्त संवेदनषीलता के साथ सूक्ष्मतापूर्वक उद्घाटित करने वाली महिला कथाकारों में ममता कालिया का नाम सबसे पहले आता है। जीवन के यथार्थ की अद्भुत विष्लेषण क्षमता ममता जी का वैषिष्ट्य है। ममता जी के उपन्यास साहित्य में युगों–युगों से पीड़ित, शोषित, प्रताडित, उपेक्षित, रूढियों के बंधन में बंधी रहने वाली नायिका का यथार्थ व सजीव अनुभूतिपरक विद्यमान है। ममता कालिया जी ने स्त्री के जीवन को स्वार्थ से परें, कर्म पर प्रधान तथा भावनाओं से लिप्त मानते हुए उसे त्याग की विषिष्टता से वर्णित किया है।*

कीवर्ड – *उपन्यास, स्त्री, जीवन, चित्रण।*

----------X----------

प्रस्तावना

ममता कालिया के उपन्यास में महिलाओं की जीवन यात्रा का स्पष्ट चित्रण किया गया है जहाँ महिला या स्त्री पहले पिता के फिर पति के तथा उसके बाद पुत्र की अधीनता में अपना जीवन व्यापित करती है। ममता कालिया कहती है कि महिला सामाजिक संरचना का महत्वपूर्ण अंग है। भारतीय संस्कृति में महिलाओं को यथोचित सम्मान भी दिया गया है। महिला जगत् को आधी दुनिया कहा जाता है। क्योंकि भारत में महिलाओं की संख्या लगभग पुरूषों के बराबर ही है। फिर भी उनकी पहचान अलग रूप में होनी चाहिए। प्राचीन काल में महिला का जीवन घर की चारदीवारों में ही बीत जाता था। चूल्हा–चौका करके ओर अधिकारों से वंचित रखा जाता था। उसकी अवस्था, अबला! जीवन हाय, तुम्हारी यही कहानी, आँचल में है दूध और आंखों में पानी। जैसी रही थी। परन्तु धीरे–धीरे समय बीतता गया और महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन आने लगा। अब वह पढ़ लिखकर अपने अधिकारों के प्रति सजग होनी लगी है। वह अब घर की चौखट लाँघकर बाहर आ गई है। सदियों से उन्हें षिक्षा प्राप्त करने के अधिकारों से वंचित रखा गया था। अब वह समाज की बेडियों से आजाद होकर नए उमंग के साथ उच्च से उच्च षिक्षा प्राप्त करने लगी है। षिक्षा से महिलाओं के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का श्रेय सावित्रीबाई फुले को दिया जाता है। उनके कार्यों से प्रेरणा लेकर वह आज प्रत्येक क्षेत्र में पुरूष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही है। षिक्षा को तीसरी आँख कहा गया है। इन नेत्रों से वह आन्तरिक व बाहय दुनिया देख सकती है तथा नयी सोच, नयी विचारधारा के साथ नवीन समाज का सृजन कर सकती है।

उपसंहार

ममता कालिया कहती है कि जब एक पुरूष षिक्षित होता है तो उसका फायदा केवल एक ही परिवार को हाता है। इसी के विपरीत जब एक स्त्री षिक्षित होती है तो उसका फायदा दो परिवारों को होता है। इसी कारण समाज में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ गई हैं षिक्षा के द्वारा उसके लिए बहुत सारे द्वार खुल गए है। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहाँ महिला काम नहीं करती। वह सीमा व सामर्थ्य को पहचानकर संघर्षरत है। आज वह किसी दबाव से मुक्त होकर अर्थोपार्जन कर रही है। आर्थिक स्वावलंबन ने उसे जो दृढ़ता, गरिमा एवं आत्मविष्वास दिया है। आज उसका पारिवारिक जीवन के साथ–साथ सामाजिक जीवन भी विकसित हो रहा है। महिला के इन समस्त रूपों को कामकाजी महिला से संबोधित किया जाता है। ममता कालिया के कहानी एवं उपन्यासों में साहित्य में कामकाजी महिला प्रमुखता से दिखाई देती है। उनके उपन्यास एवं कहानी का अध्ययन करने के पष्चात यह बात स्पष्ट होती है उनकी कहानी एवं उपन्यास साहित्य में कुषल (डॉक्टर, नर्स, अध्यापिका, मैनेजर, आया, क्लार्क, स्टेनो) और अकुषल (घर में काम करने वाली) दोनों प्रकार की महिलाएँ दिखाई देती है।

वर्तमान युग में महिलाओं के लिए अर्थोपार्जन के नये–नये द्वार खुल गये हैं। वह विविध क्षेत्रों में कार्य कर रही है। ममता कालिया की कहानी एवं उपन्यास साहित्य में कामकाजी महिलाओं का चित्रण करते प्रतीत हुए हैं। परन्तु इन कार्यों को करने के उपरान्त भी उन्हें वह सम्मान प्राप्त नहीं होता है। जो पुरूष को दिया जाता है। ममता जी स्वयं भी नौकरी पेषा महिला थी परन्तु वे कहती है कि रवीन्द्र ने कभी भी मेरे किसी काम में कभी कोई मदद नहीं करते थे। उन्हें यह भी पता नहीं होता था कि बच्चों का ट्यूटर कौन है, फीस कितनी जानी है ये समस्त कार्य सदैव मेरे ही रहे हैं। ममता कालिया ने कामकाजी महिलाओं को दोहरी भूमिका निभाते हुए चित्रित किया है एक कार्यस्थल से और दूसरी परिवार से सम्बन्धित होती है। वह प्रत्येक क्षेत्र पर सदैव कर्तव्य निर्धारण से ही बंधी है। उसकी इच्छा एवं अधिकारों का कहीं पर कोई स्थान नहीं है। ये महिलाएँ अर्थप्राप्त करने के कारण आर्थिक रू‍प से सक्षम, आत्मनिर्भर, निर्णय लेने में स्वायत्त, समस्याओं का डटकर मुकाबला करती हुई दिखाई दे रही है। फिर भी वह पीडित, शोषित व त्रासदीपूर्ण जीवन व्यथित कर रही है। बेघर उपन्यास अपने आप में एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। आज यौन शुचिता का जो मिथक टूट रहा है। उसको बड़ी खूबसूरती के साथ बेघर में ममता कालिया ने चित्रित किया है। उसके नारी पात्र भी शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के हैं। उपन्यास में बलात्कार और दाम्पत्य के बिखराव की समस्या को भी उठाया गया है। रूढिवादी व्यक्ति की प्रवृत्ति भी स्पष्ट की गई है। दाम्पत्य के बिखराव की कहानी बेघर कहता है। जहाँ नारी के शरीर के साथ उसके मन का बलात्कार भी

www.ignited.in

होता दिखलाया है। अतः नारी विमर्ष का चित्रण ममता कालिया के उपन्यासों का विष्लेषा चरित्र के आधार पर करता है।

सन्दर्भ

(1) ममता कालिया – बेघर (भूमिका से पृ0 11 तक की संदर्भित बिन्दू)

(2) ममता कालिया – प्रेम कहानी (पृ. 17)

(3) ममता कालिया – एक पत्नी के नोट्स (पृ. 38)

(4) दुक्खम–सुक्खम – ममता कालिया (पृ. 51–66)

(5) ममता कालिया – लड़कियाँ (पृ. 79)

(6) मृदुला गर्ग व्यक्तित्व और कृतित्व, सं दिनेष द्विवेदी, (पृ. 1)

(7) चुकते नहीं सवाल, मृदुला गर्ग, (पृ. 42)

(8) कितनी कैदें, संगति–विसंगति, मृदुला गर्ग, (पृ. 46)

(9) हरी बिंदी, संगति–विसंगति, मृदुला गर्ग, (पृ. 8)

(10) निरंतर और स्तरीय कहानी लेखन, महेष दर्पण, मृदुला गर्ग व्यक्तित्व एवं कृतित्व, सं : दिनेष द्विवेदी, (पृ. 281)

(11) दो एक फूल (टुकड़ा टुकड़ा आदमी), मृदुला गर्ग, (पृ. 65)

(12) वही

(13) टुकड़ा टुकड़ा आदमी (पृ. 23)

(14) तुक, (ग्लेषियर से) मृदुला गर्ग, (पृ. 55)

(15) एक चीख का इंतजार, (ग्लेषियर से) मृदुला गर्ग, (पृ. 162)

(16) बड़ा सेब – काला सेब, (समागम) मृदुला गर्ग, (पृ. 87)

(17) बीच का मौसम, (समागम) मृदुला गर्ग, (पृ. 109)

(18) अवकाष, टुकड़ा टुकड़ा आदमी, मृदुला गर्ग, (पृ. 43)

Corresponding Author

भावना चितलांगिया*

शोधार्थी, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान

Email: shalusoni201291@gmail.com